

मन्नू भंडारी के लेखन में व्यक्तिगत अनुभवों का प्रभाव: एक विश्लेषण

¹भूपेंद्र सिंह, ²डॉ. कुलदीप

¹शोधार्थी, ²पर्यवेक्षक

¹⁻²विभाग: हिन्दी, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार

इस शोधपत्र का उद्देश्य मन्नू भंडारी के साहित्य में उपस्थित निजी अनुभवों के प्रभाव को समझना है। उनका जन्म, परवरिश, पारिवारिक परिवेश, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, सामाजिक संघर्ष और लेखन यात्रा एक दूसरे से गहराई से जुड़े हैं। पारंपरिक मारवाड़ी परिवार, उदार विचारों वाले पिता, शिक्षण कार्य, कलकत्ता और दिल्ली के अनुभव, तथा राजेंद्र यादव के साथ जटिल दांपत्य ने उनके भीतर स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष और आत्म-अस्तित्व की खोज को तीव्र किया। इन्हीं अनुभवों ने उनके लेखन को यथार्थ, संवेदना और स्त्री-चेतना से भरा। आत्मकथा और कथाओं में दिखाई देने वाला स्त्री का द्वंद्व, पितृसत्तात्मक ढाँचे की आलोचना, तथा रिश्तों का टूटना और पुनर्निर्माण, उनके निजी जीवन की प्रतिध्वनि है। मन्नू भंडारी की लेखन प्रक्रिया व्यक्तिगत अनुभूतियों और सामाजिक अनुभवों का संतुलित रूप है, जो उन्हें स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथाशिल्प की महत्वपूर्ण आवाज बनाती है।

मुख्य शब्द: मन्नू भंडारी, आत्मकथात्मक प्रभाव, स्त्री-चेतना, व्यक्तिगत अनुभव, यथार्थवाद, पितृसत्ता, साहित्यिक दृष्टि, कथात्मक शैली।

भूमिका

मन्नूजी का जन्म अप्रैल 1931 में मध्यप्रदेश के भानपुरा नामक गाँव में हुआ। भाई-बहनों में सबसे छोटी तथा पिताजी की अत्यंत लाड़ली संतान थी। मन्नूजी ने जिस परिवार में जन्म लिया वह राजस्थान का रुढ़िग्रस्त तथा परम्परागत मान्यताओं का पालन करने वाला मारवाड़ी परिवार था। मन्नूजी के पिता सुखसम्पतराय भंडारी आर्यसमाजी थे। उस समय के समाज सुधारक भी थे। इसी व्यापक विचारधारा के कारण मन्नूजी तथा उनकी बहनों की शिक्षा में कोई बंधन पिताजी ने नहीं थोपा। मन्नूजी का वास्तविक नाम महेंद्र कुमारी है। लेकिन माता-पिता उन्हें प्यार से मन्नू ही पुकारते थे। यही नाम आगे कायम हो गया।

मन्नूजी की प्रारंभिक शिक्षा अजमेर स्थित सावित्री नामक स्कूल में हुई। इसी पाठशाला में उन्होंने इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपरान्त मन्नूजी अपने भाई के पास कलकत्ता पहुँची। सन् 1949 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। मन्नूजी ने बी.ए. तथा एम. ए. की उपाधियाँ बहिःस्थ छात्रा के रूप में ही प्राप्त की हैं। सन् 1952 में काशी (बनारस) विश्वविद्यालय एम.ए. किया। बी.ए. के स्तर पर उनका हिंदी विषय नहीं था। इसके उपरान्त भी मन्नूजी हिंदी साहित्य जगत् की सफल लेखिका के रूप में चर्चित हैं।

आजीविका

कलकत्ता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' में अध्यापन सेवा में नौ वर्ष कार्य किया। इसके उपरान्त तीन वर्ष कलकत्ता स्थित 'रानी बिड़ला महाविद्यालय' में अध्यापन कार्य किया। 1964 में दिल्ली के मिरांडा हाऊस महाविद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में कार्य आरंभ किया। माधुरी वाजपेयी का कथन है "अध्यापन मन्नूजी का प्रिय कार्य रहा है। अध्यापन संबंधी अपनी रुचि के विषय में उन्होंने 'एक पुरुष एक नारी' नामक रचना में स्वयं स्वीकार किया है— "यों शौक में आकर लिख लिया करती हूँ, लेकिन मेरी असली लाईन तो पढ़ाना ही है।" मन्नूजी विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की अध्यक्ष रहीं।

पारिवारिक जीवन

मन्नूजी कलकत्ते में जिस स्कूल में अध्यापन कार्य करती थीं, उसी के माध्यम से श्री राजेंद्र यादव से उनका परिचय हुआ। राजेंद्र यादव उस समय में हिंदी के एक प्रतिष्ठित साहित्यिक के रूप में मान्यता पा चुके थे। मन्नूजी का लेखन कार्य उस समय आरंभ हो चुका था। इसी लेखन के सिलसिले वश मन्नूजी का परिचय राजेंद्रजी से घनिष्ठ हो गया। यही घनिष्ठता आगे शिष्टता में परिवर्तित हो गई। सन् 1959 में दोनों ने अन्तर्जातीय विवाह कर लिया। इस विवाह का परिवार वालों ने विरोध किया था। सन् 1961 में एक पुत्री का जन्म हुआ। इस पुत्री का नाम 'रचना' रखा गया। परन्तु उसे टिंकू नाम से पुकारा गया। 1964 में मन्नूजी तथा राजेंद्रजी दिल्ली आ गए। यहाँ मिरांडा हाऊस महाविद्यालय में मन्नूजी ने अध्यापन कार्य किया। राजेंद्रजी ने अक्षर प्रकाशन की स्थापना की।

लेखन संस्कार एवं प्रभाव

"मन्नूजी की प्रकाशित पुस्तकों से यह ज्ञात होता है कि लेखन संस्कार उन्हें अनुवांशिक रूप में प्राप्त है। लेकिन मन्नूजी अपनी माता अनूपकुंवरी के व्यक्तित्व से भी प्रभावित हैं। उनकी माताजी का स्वभाव उदार, समर्पणशील तथा कर्तव्यप्रिय था।"² मन्नूजी अपनी माँ के प्रति अधिक संवेदनशील थी। अतः माँ के प्रति उनका जो लगाव था वही आगे चलकर लेखन का विषय सिद्ध हुआ। इस संदर्भ में डॉ. साधना अग्रवाल का कथन द्रष्टव्य है— "मन्नू के नारी पात्र पुरुष के प्रति संवेदनशील एवं स्नेहशील होकर भी कुछ ईर्ष्यालु तथा प्रायः उसके प्रति स्पर्धाभाव रखने वाले एवं प्रतिद्वंद्वी हैं।"³ नारी के जिस स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व की बात मन्नू के साहित्य में मुखर है, वास्तव में वह सुधी आलोचक को वहाँ कम ही दृष्टिगत होती है। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण तथा अनेक स्थानों के अनुभवों के कारण मन्नूजी का साहित्य लेखन प्रभावित हुआ। विवाहोपरान्त अपने लेखन के संदर्भ में मन्नूजी का स्वयं कहना है कि "जहाँ तक मेरे लेखन का सवाल है, निश्चय ही राजेंद्र के साथ ने उसे बहुत संवारा और समृद्ध बनाया है। अनुकूल वातावरण, समानधर्मा मित्र मंडली, हर समय लेखन और लेखकीय समस्याओं से गुजरना इस सबने एक प्रेरणास्पद वातावरण तो मुझे दिया ही, खुद एक बेहद समर्पित लेखक होने के नाते जब से राजेंद्र का लिखना कुछ कम हुआ है ये सारे समय लिखने के लिए मेरी जान को लगे रहते हैं।"⁴ अतः मन्नूजी को भले ही लेखन संस्कार आरंभ में पिता द्वारा प्राप्त तथा विवाहोपरान्त पति द्वारा उसका परिष्कार हो, परन्तु उनका अपना स्वतंत्र अनुभूति का प्रभाव अपने साहित्य में यत्र-तत्र व्याप्त जरूर है।

जीवन विषयक मान्यताएँ

विवाह के बाद मन्नूजी को कुछ प्रसंगों एवं अवसरों पर परिवार तथा मित्रों के परिहास का भागी होना पड़ा। लेकिन मन्नू जी अविचलित रहकर आगे बढ़ती गई। विवाह के बारे में उनकी माँग संपूर्ण ईमानदारी की है। विवाह को मन्नूजी ऐसा बंधन मानती हैं कि उसे मनुष्य स्वयं अपनाता है। यदि यह बंधन मनुष्य को कष्टप्रद लगे तो उससे बाहर निकलने का कोई उपाय नहीं होता। विवाह मानव जीवन की आवश्यकता है। विवाह के बगैर मनुष्य पूर्णत्व को प्राप्त नहीं कर सकता। वैवाहिक जीवन में परस्पर सहयोग तथा समन्वय को पति-पत्नी ने स्थापित करके उन्हें कायम करने की आवश्यकता उनके साहित्य में निहित है। लेखिका के मतानुसार "विवाह एक ऐसा बंधन है जिसमें बंधा हुआ आदमी छटपटाए और न बंधा हुआ भी छटपटाए।"⁵

जीवन के संदर्भ में मन्नूजी की मान्यता यह है— "जिंदगी अपनी शर्तों पर या अपने मनचाहे ढंग से शायद ही किसी को मिलती हो। जो नहीं मिला उसी की चोट से हम जीवन भर टूटते बिखरते रह जाते हैं या जो कुछ भी मिला उसी को भरपूर निचोड़, वसूल कर सार्थकता या उपलब्धि का संतोष भी पा सकते हैं। मैंने भरसक दूसरी तरह के रवैये को अपनाने की कोशिश की है।"⁶ मन्नूजी के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य को न वर्तमान स्थिति तथा प्रसंगादि पर हावी होकर उन्हें अपने काबू में कर लेना अनिवार्य है, न उनकी पकड़ में बंधकर रहना। आधुनिकता के संदर्भ में मन्नूजी अपने साहित्य में जगह-जगह पर परोक्ष-अपरोक्ष रूप से स्पष्ट करती हैं कि पति-पत्नी को आधुनिकता की होड़ में पारिवारिक तथा सामाजिक

तत्त्वों का तथा उचितानुचित का ध्यान रखना चाहिए। उनकी यह मान्यता 'आपका बंटी' उपन्यास में स्पष्टतः ज्ञात होती है। अतः मन्नूजी की जीवन विषयक मान्यताएँ परम्परा तथा आधुनिकता के मध्य की वह मणिकांचन श्रृंखला है, जो पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर मनुष्य को मनुष्यता से टूटने से बचाती है। आधुनिक नारी की अस्मिता, स्वतंत्र व्यक्तित्व की पहचान तथा सामाजिक जड़ताओं से लड़ने के उसके साहस की पैरवी मन्नूजी करती हैं, परंतु साथ ही साथ उसे उच्छृंखलता से बचने की परोक्ष रूप से हिदायत भी देती है। जैसे 'ऊँचाई' कहानी की नायिका 'शिवानी' और 'यही सच है' कहानी की 'दीपा'। ऐसे पात्रों की यथार्थवादिता का केवल यथार्थ न होकर अवसरवादिता भी है। अतः मेरी दृष्टि से मन्नूजी यथार्थ को चित्रित तो करती हैं, परंतु अवसरवादी वृत्ति का समर्थन नहीं कर सकती क्योंकि उनकी जीवन विषयक मान्यताएँ भारतीय नारी की गरिमा से ओत-प्रोत हैं। इस संदर्भ में डॉ. अनीता राजूरकर का कथन द्रष्टव्य है "श्रीमती मन्नू भंडारी को जो कोई एक बार देखता है तो उसे उनके माथे की बड़ी-सी बिंदी याद रह जाती है। विश्व में भारतीय नारी की पहचान 'बिंदी' है। मन्नूजी सिर्फ बिंदी से ही नहीं अपितु संपूर्ण व्यक्तित्व से आम घरेलू भारतीय नारी का एहसास दिलाती है। अतः मन्नूजी की जीवन विषयक मान्यताएँ दूसरों के व्यक्तित्व तथा उसके प्रतिफलन की परिचायक हैं। उनकी रचनाओं में ये मान्यताएँ सर्वत्र व्याप्त हैं। मनुष्य को अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का पूर्ण अधिकार है परंतु संयत दृष्टिकोण से असंयत से नहीं। यही उनकी जीवन विषयक मान्यताएँ हैं।

लेखन विषयक मान्यताएँ

मन्नूजी ने अपनी लेखन मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए कहा है— "मेरे लिए लिखना दो तरह का होता है। एक वह जो मैं कलम लेकर कागज पर लिखती हूँ और जो काफी लम्बे अन्तराल के बाद ही संभव हो पाता है।"⁷ "दूसरा वह जो जो बिना कागज-कलम के दैनंदिन कामों के साथ-साथ बैकग्राउंड म्यूजिक की तरह मन की परतों पर निरंतर ही चलता रहता है। बाहर वालों के लिए महत्वपूर्ण वह है जो कागज पर लिखा गया और उन तक पहुँच गया। लेकिन मेरे लिए तो 'मेरा मानसिक लेखन' ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके दौरान ही रॉ मैटिरियल का वह भंडार जमा होता है, जिसमें से कुछ चीजें चुनकर, उन्हें काट-छाँट और तराश कर तैयार माल की तरह मैं बाहर ला पाती हूँ।"⁸ समाज में व्याप्त जो भी घटित होता है उसे ही मन्नूजी लेखन सामग्री के रूप में प्रयोग करती हैं। पाठकों के अनुभवों से अपने अनुभव एकरूप कर देती हैं। उन्होंने खुद कहा है— "कभी-कभी कोई 'ब्रिलियंट आइडिया' जरूर लिखने के लिए उकसाती है, पर जब तक वह जीवन के साथ पूरी तरह गुँथ नहीं जाता, कहानी के रूप में उसे ढालना मेरे लिए संभव नहीं होता।"⁹ जीवन की धड़कन से भरपूर स्थितियाँ, विचार या समस्याएँ ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। इस प्रकार मन्नूजी के लेखन में जो यथार्थ व्याप्त है, वह उनके निजी अनुभवों का निचोड़ है। इसीलिए उनकी लेखन मान्यताएँ तथा प्रक्रिया वर्तमान से सौ प्रतिशत जुड़ जाती हैं। मन्नूजी की लेखन प्रक्रिया में कहीं भी आदर्श का पुट नहीं है। क्योंकि मन्नूजी स्वातंत्र्योत्तर काल की लेखिका हैं। संभवतः मन्नू जी ने प्रेमचंद जी के इस कथन का भली-भाँति पालन किया है— "आदर्श से काम नहीं चलेगा। प्रेमचंद अपने अंतिम दिनों में बीमारी से जूझ रहे थे। उस समय जैनंद्र जी उन्हें मिलने लमही गए थे, उसी समय उपर्युक्त कथन का जिक्र प्रेमचंद जी ने किया था।"¹⁰ इसी प्रकार मन्नूजी की लेखन मान्यताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव ने कहा है— "व्यर्थ के भावोच्छ्वास में नारी के आँचल का दूध और आँखों का पानी दिखाकर उसने (मन्नू भंडारी ने) पाठकों की दया नहीं वसूली ... वह एक यथार्थ के धरातल पर नारी का नारी की दृष्टि से अंकन करती है।"¹¹ अतः मन्नूजी की लेखन मान्यताएँ आधुनिकता के साथ-साथ व्यक्तिगत अस्तित्व तथा नैतिकता की यथार्थ नई परिभाषा को उद्घाटित करती हैं।

मान-सम्मान

मन्नूजी को उनकी साहित्य सेवा के अनुरूप निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

1. 'महाभोज' उपन्यास को सन् 1979-80 में भारतीय भाषा परिषद की ओर से 11,000 रु. का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2. महाभोज उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 6000 रु. का पुरस्कार दिया गया।
3. सन् 1980-81 में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से 'अहिंदी भाषी' क्षेत्र की हिंदी लेखिका के रूप में मन्नूजी को सम्मानित किया गया
4. सन् 1982-83 का क्रमशः भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवार्ड एवं पीपल्स एवार्ड देकर सम्मानित किया गया है।

पुरस्कारों का अस्वीकरण

मन्नूजी को सन् 1976 में आपात स्थिति के दौरान 'पद्मश्री' पुरस्कार दिये जाने का निर्णय हुआ था, फिर साहित्यकला परिषद दिल्ली ने भी उन्हें पुरस्कृत करना चाहा था किंतु दोनों ही पुरस्कार उन्होंने विनयपूर्वक अस्वीकार कर दिए। इस संदर्भ में डॉ. अनीता राजूरकर का कथन है— "जिस सरकार ने भारतीय जन सामान्य पर आपात स्थिति लादी उस स्थिति में उस सरकार का विरोध करना मामूली बात नहीं है।"¹² मन्नूजी की हिम्मत और दृढ़ता इस बात से स्पष्ट होती है। 'साहित्य कला परिषद' दिल्ली द्वारा दिया गया सम्मान आज समाज में उचित नहीं समझा जाता। जनसाधारण की धारणा है कि चापलूसी के कारण वह पुरस्कार आसानी से किसी को भी मिल सकता है। इसीलिए इस ढंग का पुरस्कार मन्नूजी ने अस्वीकृत कर दिया।

भंडारी की आत्मकथा में नारीवादी दृष्टिकोण

मन्नू भंडारी अत्यंत संवेदनशील साहित्यकार हैं। साहित्य में उन्होंने पितृसत्तात्मक समस्या के विविध रूपों का वर्णन किया है "हमारे यहाँ कुछ व्रत-उपवास ऐसे हैं, जिनको करने के बाद स्त्री अपने पति के पैर छूने जाती है और पति महाशय... गाँव-देहात के सामान्य- साधारण की बात तो छोड़ ही दीजिए, शहर के पढ़े-लिखे आधुनिकता का तमगा लटकाए, स्त्री-पुरुषों की बराबरी का ढोल पीटने वाले लोग भी उस समय शुद्ध 'पति परमेश्वर' बने आराम से अपने पैर बाहर कर देते हैं। कभी कोई इनके इस आचरण पर टिप्पणी करे तो तुरूप के पत्ते की तरह यह तर्क तो हमेशा उनके हाथ में रहता ही है...अरे, हमें तो खुद यह सब बिलकुल पसंद नहीं पर क्या करें... पत्नी की खुशी के लिए उसके संतोष के लिए करना पड़ता है। पत्नी के सुख और संतोष की दायेदारी करने वाले ऐसे ही लोगों में से दो एक को तो मैंने अपनी पत्नी को मारते भी देखा है। कुछ पत्नियाँ शरीर पर प्रहार झेलती हैं, तो कुछ अपनी भावनाओं पर। जैसे झेलना-भोगना तो पत्नियों की नियति ही हो ?"¹³ मन्नू भंडारी ने अपने लेखन में समाज की विसंगतियों के साथ पति-पत्नी के दरकते रिश्तों व उनमें पैदा होते अविश्वास को भी दिखाया है। समाज का कोई भी पहलू उनके लेखन से अछूता नहीं है।

मन्नू भंडारी अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में स्त्री जीवन की समस्याओं से हमें अवगत करवाती हैं। लेखक की पत्नी होने का जो दंश इन्होंने झेला वह काफी पीड़ादायक रहा है। उन्होंने हमें मध्यवर्गीय स्त्री की समस्याओं से रूबरू करवाया है। अपने पति के दोगले व्यवहार के बारे में वे लिखती हैं— "तो झूठ बोलकर राजेन्द्र उषा से मिलने गए। झूठ तो खैर ये सारी जिंदगी मुझसे बोलते ही रहे हैं पर बच्ची को इस हालत में छोड़कर? उषा तो अभी कुछ दिन रहने वाली थीं, फिर कभी मिल लेते। पिता तो बाद की बात है, पहला पहला प्रश्न तो उठा ये इंसान भी हैं?"¹⁴ "इन्होंने लेखन के क्षेत्र में जो राजनीतियाँ होती है, उनका वर्णन किया है, साथ ही एक नौकरीपेशा नारी और बेरोजगारी का दंश झेलने वाले पुरुष के रिश्तों की ऊहापोह का वर्णन भी बखूबी किया है। जब पति नौकरी नहीं करता है और पत्नी नौकरी करती है तब औरत की स्थिति ज्यादा सोचनीय हो जाती है। उसे पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक तीनों स्तरों पर अपने आप को सामान्य गृहणी की अपेक्षा ज्यादा साबित करना पड़ता है। आधुनिक समय में नौकरीपेशा स्त्री की इच्छा तो सभी करते हैं लेकिन उसे वो सम्मान नहीं दिया, जो नौकरीपेशा पुरुष को दिया जाता है। राजेन्द्र यादव का अहं इतना बड़ा है कि वे हर क्षण अपनी नौकरी पेशा और सदचरित्र पत्नी की भावनाओं को आहत करते नजर आते हैं, 'एक कहानी यह भी' को पढ़कर इसे आसानी से जाना जा सकता है।"¹⁵

मन्नू भंडारी का सामाजिक जीवन एक दूसरी ही कहानी कहता है, जिसमें वे एक ऐसे आदमी के साथ अपनी जिन्दगी के 35 वर्ष गुजार देती हैं जो न तो पति होने और न ही प्रेमी होने की सामाजिकता पर खरा उतरता है। वे लिखती हैं— “अपने को विशिष्ट मानने वाले राजेन्द्र की धारणा पत्नी की भूमिका के बारे में विशिष्ट नहीं, सचमुच चौकाने वाली थी। इनके हिसाब से पत्नी को एक नर्स की भाँति होना चाहिए जो सिर्फ पति की सेवा करे, बदले में उससे अपेक्षा कुछ ना करे।”¹⁶ मन्नू भंडारी का सामाजिक जीवन परंपरागत भारतीय नारी के लिए तो आदर्श हो सकता है, लेकिन आधुनिक भारतीय नारी के लिए नहीं। अपनी आत्मकथा में उन्होंने नौकरी-पेशा महिलाओं को किस तरह नौकरी, घर और समाज के मध्य पिसना पड़ता है, इस का अंकन किया है।

मन्नू भंडारी स्त्री अस्मिता के बारे में लिखती हैं— “हमसे पहले वाली पीढ़ी की स्त्री का न कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व होता था... न ही कोई स्वतंत्र पहचान, वह तो मात्र रिश्तों से ही पहचानी जाती थी। वह किसी की बेटी, पत्नी, माँ, बहन, चाची-ताई, बुआ-भाभी ही होती थी। इन रिश्तों से परे भी उसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व है... उसका अपना कोई नाम भी है, इस बात का उसे कोई बोध तक नहीं था...न उसे, न उसके परिवार के लोगों को बल्कि कहूँ कि समाज को। लेकिन समय के साथ-साथ शिक्षा, जागरूकता, आर्थिक स्वतंत्रता और बाहरी दुनिया से बढ़े रिश्तों ने उसके भीतर इस बोध को जगाया कि रिश्तों से परे भी उसकी अपनी एक स्वतंत्र सत्ता है अपनी अस्मिता है कि वह भी समाज की एक स्वतंत्र जीवन इकाई है।”¹⁷ मन्नू भंडारी स्वयं आत्मनिर्भर महिला है और उन्होंने अपने व्यक्तित्व व साहित्य-सृजन से साबित करके दिखाया कि स्त्री बहुत से मामलों में पुरुष से श्रेष्ठ है। वह चाहे गृहस्थी की जिम्मेवारी हो, बच्चों का पालन पोषण हो या फिर साहित्य सृजन का बौद्धिक कार्य ही क्यों न हो।

आलोच्य लेखिकाओं की सफलता को गृहस्थी निभाने, बच्चों की परवरिश करने और लेखन के क्षेत्र में अपनी पहचान को बनाये रखने में उद्यत देखा जा सकता है। पढ़ी-लिखी और कुछ हद तक आर्थिक स्वतंत्रता मिलने के बावजूद रूढ़िवादी विचारों के शिकंजे से मुक्ति की तलाश में इन्हें कई संदर्भों में असफलता हाथ लगी है। स्त्री की स्वतंत्रता को प्रभा खेतान उसकी आर्थिक निर्भरता से जोड़ती हैं।¹⁸

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी के साहित्य का गहराई से अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि उनका लेखन केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि जीवन-संघर्षों और निजी अनुभूतियों का सधा हुआ दस्तावेज है। परंपरागत मारवाड़ी परिवेश, पिता की उदार सोच, शिक्षिका के रूप में मिले अनुभव, तथा विवाह और दांपत्य की जटिलताओं ने उनके भीतर स्त्री जीवन की वास्तविकताओं को समझने की दृष्टि विकसित की। यही दृष्टि उनकी कहानियों, उपन्यासों और आत्मकथा में बार-बार उभरती है। उनके पात्र जीवन की धड़कनों से जुड़े हैं क्योंकि वे उन्हीं स्थितियों का प्रतिफल हैं जिन्हें लेखिका ने स्वयं जिया। लेखन में ईमानदारी, यथार्थ की स्पष्टता, और स्त्री अस्मिता की खोज उनके साहित्य की सबसे बड़ी ताकत बनती है। अंततः कहा जा सकता है कि मन्नू भंडारी का साहित्य उनके व्यक्तिगत अनुभवों से गढ़ा हुआ जीवंत और प्रभावशाली सच है, जिसने हिंदी कथा साहित्य को नई दिशा और सामाजिक संवेदना दी।

संदर्भ सूची

1. माधुरी वाजपेयी , उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन) , पृष्ठ संख्या 9
2. माधुरी वाजपेयी , उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन) , पृष्ठ संख्या 180
3. डॉ. साधना अग्रवाल, लेखन और दाम्पत्य जीवन (विश्लेषण तथा आकलन), पृष्ठ संख्या 9
4. माधुरी वाजपेयी , उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन) , पृष्ठ संख्या 19



5. माधुरी वाजपेयी , उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन) , पृष्ठ संख्या 19
6. माधुरी वाजपेयी , उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन) , पृष्ठ संख्या 10
7. डॉ. अनीता राजूरकर, कथाकार मन्नू भंडारी, पृष्ठ संख्या 7
8. माधुरी वाजपेयी, उपन्यासकार मन्नू भंडारी (एक अध्ययन), पृष्ठ संख्या 65
9. सं. मोहन गुप्त, मन्नू भंडारी – प्रतिनिधि कहानियाँ, पृष्ठ संख्या 5
10. सं. बालकृष्णराव और श्रीराम शर्मा, प्रकीर्णिका, पृष्ठ संख्या 13
11. सं. मोहन गुप्त, मन्नू भंडारी – प्रतिनिधि कहानियाँ, पृष्ठ संख्या 5
12. डॉ. अनीता राजूरकर, कथाकार मन्नू भंडारी, पृष्ठ संख्या 12,13
13. मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, पृष्ठ संख्या 124
14. प्रकाशवती पाल, लाहौर से लखनऊ तक, पृष्ठ संख्या 87
15. मन्नू भंडारी, एक कहानी यह भी, पृष्ठ संख्या 98

